तित्थयर

जैन भवन

Received 6.3-2000

वर्ष : २३ अंक : ११
फरवरी २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

॥ जैन भवन ॥

कलकत्ता

वर्ष - २४ अंक - १०, फरवरी २०००

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख		लेखक	पृ. सं.
रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	-	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	१२७
देव निर्मित (वोद्वेथूभे) जैन स्तूप	-	श्री कुन्दनलाल जैन	१३३
मलयासुन्दरी चरित्र	-	-	१३७
संकलन	-	-	१५०

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

जब तक वृद्धावस्था नहीं आती, जब तक व्याधियों का जोर नही बढ़ता, जब तक इन्द्रियाँ क्षीण नहीं होतीं, तब तक विवेकी आत्मा को जो भी धर्म का आचरण करना है वह कर लेना चाहिए।

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

रुद्रपल्लीयगच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश

डा० शिव प्रसाद सिंह

पूर्वानुवृत्ति

जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम) नवांगी वृत्तिकार
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय)
|
देवभद्रसूरि

प्रभानन्दसूरी — श्रीतिलकसूरी (गौतमपृच्छावृत्ति के रचनाकार)

प्रभानन्दसूरी के शिष्य: श्रीचन्द्रसूरी — बिमलचन्द्रसूरी

चारुचन्द्र — जिनभद्र — गुणशेखर

(इन तीनों को श्री तिलकसूरि ने उपाध्यायपद तथा श्रीचन्द्रसूरि ने आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया)

३. षट्दर्शनसमुच्चयटीका - रुद्रपल्लीयगच्छ के संघतिलक सूरि के शिष्य सोमतिलक अपरनाम विद्यातिलकसूरि ने वि० सं० १३९२/ई० सन् १३३६ में उक्त कृति की रचना की। इसकी प्रशस्ति में उन्होने अपनी गुर्वावली तथा कृतिकाल आदि का उल्लेख किया है:

श्रीचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
गुणशेखरसूरि
|
संघतिलकसूरि
|
सोमतिलक अपरनाम विद्यातिलक सूरि
(वि० सं० १३९२/ ई० सन् १३३६ में
षट्दर्शन समुच्चय टीका के रचनाकार)

इनके द्वारा रचित वीरकल्प, कुमारपालचरित शीलतरंगिणीवृत्ति, लघुस्तवटीका, कन्यानयन महावीर प्रतिमाकल्प (कल्पप्रदीप अपरनाम विविधतीर्थकल्प के अन्तर्गत) आदि कृतियां मिलती हैं जिनके बारे में यथास्थान उल्लेख किया गया है।

४. सम्यकत्वसप्ततिकाटीका - प्राकृत भाषा में रची गयी यह कृति रुद्रपल्लीयगच्छ के आचार्य गुणशेखरसूरि के शिष्य संघतिलक सूरि की कृति है। इसकी प्रशस्ति में टीकाकार ने अपनी गुरु परम्परा तथा प्रस्तुत कृति के रचनाकाल आदि का उल्लेख किया है, जो इस प्रकार है;

वर्धमानसूरि
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम)
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय)
|
देवभद्रसूरि
|
प्रभानन्दसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
गुणशेखरसूरि
|
संघतिलकसूरि (वि० सं० १४२२/ई० सन् १३६६ में सम्यकत्वसप्ततिका टीका के रचनाकार)

५. **भक्तामरस्तोत्रवृत्ति** - यह वृत्ति आचार्य गुणचन्द्र के शिष्य गुणाकरसूरि द्वारा रची गयी है। इसकी प्रशस्ति में ग्रन्थकार ने अपनी गुरु - परम्परा दी है, जो निम्नानुसार है:

श्रीचन्द्रसूरि
|
विमलचन्द्रसूरि
|
जिनभद्रसूरि
|
गुणशेखरसूरि
|
श्रीतिलकसूरि
|
गुणचन्द्रसूरि

अजितदेवसूरि | गुणाकरसूरि (वि० सं० १४२६/ई० सन् १३६० में भक्तामरस्तोत्र वृत्ति के रचनाकार)

६. **मातृकाप्रथमाक्षरदोहा** - यह अभयदेवसूरि के शिष्य पृथ्वीचन्द्रसूरि की कृति है, जो वि० सं० १४२६ के आस पास रची मानी जाती है। इसकी प्रशस्ति में रचनाकार ने अपनी लम्बी गुरु - परम्परा का उल्लेख न करते हुए केवल अपने गुरु तथा गच्छ आदि का ही वर्णन किया है :

अभयदेवसूरि
|
पृथ्वीचन्द्रसूरि (वि० सं० १४२६/ई० सन् १३६० के आसपास मातृकाप्रथमाक्षर दोहा के रचनाकार)

७. **प्रश्नोत्तररत्नमालावृत्ति** - यह संघतिलकसूरि के शिष्य देवेन्द्र सूरि की कृति है, जो वि० सं० १४२९ में रची गयी है। देवेन्द्रसूरि ने भी प्रशस्ति में मात्र अपने गच्छ और गुरु का ही नाम दिया है:

संघतिलकसूरि
|
देवेन्द्रसूरि (वि० सं० १४२९ में प्रश्नोत्तर रत्नमालावृत्ति के रचनाकार)

८. आचारदिनकर - यह रूद्रपल्लीय गच्छ के अभयदेवसूरि (तृतीय) के शिष्य वर्धमानसूरि की कृति है जो वि० सं० १४६८/ई० सन् १४१२ में रची गयी है। इस ग्रन्थ में जिनप्रतिमा सम्बन्धी शास्त्रीय लक्षणों का निरुपण गुरु - परम्परा, ग्रन्थ के रचनाकाल आदि का विस्तार से उल्लेख किया है। प्रशस्तिगत गुर्वावली निम्नानुसार हैः

वर्धमानसूरि (प्रथम)
|
जिनेश्वरसूरि
|
अभयदेवसूरि (प्रथम)
|
जिनवल्लभसूरि
|
जिनशेखरसूरि
|
पद्मचन्द्रसूरि
|
विजयचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (द्वितीय)
|
देवभद्रसूरि
|
भद्रंकरसूरि
|
प्रभानन्दसूरि
|
श्रीचन्द्रसूरि
|
जिनभद्रसूरि
|
गुणचन्द्रसूरि
|
अभयदेवसूरि (तृतीय)
|
जयानन्दसूरि — वर्धमानसूरि (द्वितीय) (वि० सं० १४६८/ई० सन् १४१२ में आचारदिनकर के रचनाकार)

९. शीलवतीकथा - यह सम्बद्ध गच्छ के आनन्दसूरि के शिष्य आज्ञासुन्दर सूरि द्वारा रची गयी है इसका रचना काल वि० सं० १५६२/ ई० सन् १५०६ बतलाया गया है। इसकी एक प्रति जैसलमेर के तपागच्छीय ग्रन्थ भंडार में संरक्षित है। चूंकि इस भंडार के हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रशस्तियां अभी प्रकाशित नहीं हो सकी हैं अतः हम ग्रन्थकार के गच्छ और गुरु के नाम तथा रचनाकाल आदि के अतिरिक्त कोई विशेष बात ज्ञात नहीं कर पाते हैं।

?
|
आनन्दसुन्दरसूरि
|
आज्ञासुन्दरसूरि

मुनियों के सुन्दरान्त नामों का प्रयोग सर्वप्रथम तपागच्छ में प्रारम्भ हुआ, बाद में खरतरगच्छ में भी इसका प्रयोग होने लगा जैसे सोमसुन्दर, भुवनसुन्दर, आनन्दसुन्दर आदि।

क्रमशः

देव निर्मित (वोद्वेथूभे) जैन स्तूप

श्री कुन्दनलाल जैन

> तित्थयर के अप्रेल - सितम्बर १९९९ के विशेषांक में प्रकाशित श्री रमेश चन्द्र शर्मा के लेख 'मथुरा के जैन' साक्ष्य के पृष्ठ न० ११४ में वर्णित देव निर्मित स्तूप बौद्ध नहीं है यह जैन स्तूप है जिसे अज्ञानवश बौद्ध स्तूप लिखा गया है। मुझे आशा है कि प्रस्तुत लेख इस भ्रान्ति को दूर करने में सहायक होगा।
>
> सम्पादकीय

तित्थयर के इस अपैल - सितम्बर १९९९ के महावीर विशेषांक में पृ. १०९ - १२१ तक तथा ऋषभ सौरभ १९९२ के पृ. ५८ पर आदरणीय डा. रमेश चन्द जी शर्मा का विस्तृत आलेख मथुरा के जैन साक्ष्य शीर्षक से पढ़ने को मिला। लेख आधिकारिक प्रमाणों सहित अति शोधकारक एवं उच्च कोटि का है, नये शोधार्थियों के लिए पर्याप्त जानकारियों से भरा पड़ा है पर एक जरा सी घुंडी ने दो ऐतिहासिक संस्कृतियों के ज्ञान में आमूल चूल परिवर्तन सा कर दिया है, जिससे पीड़ा हुई है और 'उद्वाहुरिववामन' की उक्ति को चरितार्थ कर रहा हूं। हो सकता है यह Slips of pen हो या अनजाने ही द् में मिश्रित व् पर घुंडी चढ़ गई हो और वह वोद्वे शब्द बोद्धे में परिवर्तित हो गया हो जो प्राचीन जैन स्तूप को प्राचीन बोद्ध स्तूप की सिद्धि में महान् ऐतिहासिक और पुरातात्विक भ्रान्ति का कारण बना, जो नहीं होना चाहिए था इससे भावी शोधार्थी भ्रान्ति में फंस जायगें और गलत निर्णय अपनी भावी पीढ़ी को छोड़ जावेगें।

सच्चाई यह है कि यह स्तूप वोद्वे (VODVE) नाम से ही प्राचीन पुराविदों में, (भले ही वे भारतीय हों या पाश्चात्य विद्वान्) विख्यात रहा है और प्राचीन ब्राह्मी की अल्पज्ञतावश वे इस वोद्व शब्द का खुलासा नहीं कर सके। वोद्वे - वोद्वे ही प्रचलित रहा और इसके खुलासा समाधान की ओर किसी का ध्यान ही नही गया इसके प्राचीन लिपिकाल तथा थूभे शब्द से ही संतुष्ट होते रहे।

चूंकि यह जैन स्तूप है अतः इसकी प्राचीनता तथा अन्य जैन जानकारियों के प्रचार प्रसार हेतु स्व. डा. कामता प्रसाद जी ने अपनी अहिंसा वाणी शीर्षक शोधपत्रिका के महावीर विशेषांक के लिए स्व. डा. के. डी. वाजपेयी सा. से इस स्तूप से संबंधित अच्छा शोध परक लेख मांगा तो स्व. संपादक जी महोदय ने उसे सहर्ष प्रकाशित कर दिया यह बहुत पुरानी बात है। मैं चूंकि उपर्युक्त दोनों ही विद्वानों की शोध परक प्रवृत्तियों से भली भांति परिचित रहा हूं तथा दोनों के साक्षात् दर्शन किए है। मैं वाजपेयी सा. के बौद्वे शब्द की व्युत्पत्ति को जानने के लिए अति व्याकुल रहा अतः मैंने दिल्ली के तथा बाहर के मूर्धन्य पुरातत्वविदों और खासकर प्राचीन ब्राह्मीलिपि विशेषज्ञों से संपर्क साधा और वोद्वे शब्द के विषय में चर्चा एवं विशद विचार विमर्श किए पर सभी का कहना हुआ कि प्रतिभालेख की मूल छाप (फोटो प्रति) देखे बिना कोई निश्चित निर्णय नहीं किया जा सकता फलतः वाजपेयी सा. के लेख की फोटो प्रतिलिपि मंगवाई उसमें वह छाप भी विद्यमान थी । मैने आनन फानन उस छाप की फोटो प्रति सभी विद्वानों को भेजी फलतः कुछ तो मौन रह गये पर डा. कृष्ण देवजी तथा श्री बहादुर चंद्र जी छावड़ा प्रभृति मूर्धन्य प्राचीन ब्राह्मी लिपि विशेषज्ञों ने बताया कि वोद्वे जैसा कोई स्पष्ट शब्द नहीं पढ़ा जाता अपितु द्वे बिल्कुल स्पष्ट और साफ पढ़ा जाता है तथा वो का झुकाव प्रतिमा की तरफ पढ़ा जाता है। अतः स्पष्ट पाठ प्रतिभावो द्वे थूभे प्र० होता है । मुझे कुछ शान्ति हुई कुछ दिनों बाद अचानक स्व. श्री उमाकान्त प्रेमाकान्त प्रेमानन्द शाह का आलेख कहीं पढ़ने को मिल गया और उसमें उपर्युक्त पाठ देखकर पूर्ण शान्ति प्राप्त हुई इस पर सारे नोट्स जो अब तक छितरे बिखरे पड़े थे उन्हें भली भांति संभालकर इस वोद्वे पर लेख लिखकर पाठकों को आश्चर्य चकित करना चाहता था पर दुर्भाग्य कि अस्वस्थता वश वह कार्य रूका सो रूका ही रहा अब श्री शर्मा जी का उससे संबंधित लेख को देखा तो भूचाल सा दिमाग में आया, मैनें शर्मा जी को व्यक्तिगत पत्र भी लिखा संभवतः इस पर अजमेर संगोष्ठी में भी चर्चा हुई होगी और स्मारिका छपने की तैयारी हो रही होगी अतः पू. उपाध्याय ज्ञान सागर जी महाराज को यथार्थ स्थिति से अवगत कराया साथ ही संशय निवारण हेतु तित्थयर पत्रिका को यह लेख भेज रहा हूं।

यह समस्या जब से मथुरा के कंकाली टीले से खुदाई में प्राप्त प्रतिभा लेख से अब तक वोद्वे रूप में ही प्रचलित चली आ रही है। श्री शर्मा जी को लगा कि इतनी बड़ी समस्या का चमत्कारिक समाधान एक जरा ही घुंड़ी के परिवर्धन से बड़ी सहजता और सरलता से संभव है और इसमें न सांप मरे और न लाठी टूटे की उक्ति भली भांति चरितार्थ हो सकती है। अतः उन्होंने वोद्वे के द्वे में मिश्रित आधे व के ऊपर एक और चमत्कारिक घड़ी चढ़ाकर व को ध् में परिवर्तित कर दिया और बड़ी सरलता और सहजता से पूरा शब्द वोद्वे (VODVE) न रहकर वोद्वे वन गया, रही बात व और ब की सो प्राचीन लिपिकारों ने इन दोनों अक्षरों में कोई विशेष अन्तर नहीं माना जाता रहा फलतः वोद्वे शब्द बोद्धे में बदल जाने से किसी को कोई आपत्ति न रहेगी भले ही एक संस्कृति का अभ्युदय और दूसरी संस्कृति को क्षति पहुंचती रहे। पर पूरे प्रतिभा लेख में छिपे आंतरिक जैन तथ्यों के प्रति श्री शर्मा जी दृष्टि नहीं पहुंची।

नंद्यावर्त (डा. के. डी. वाजपेयी का पाठ मुनिसुव्रतस) श्राविका, गण, गच्छ शाखा आदि जैन अन्तर्साक्ष्यों के प्रति शर्मा जी की दृष्टि ओझल ही रही, और यह जैन स्तूप बौद्ध स्तूप में निर्णायक रूप से घोषित कर दिया गया। इस भूल को विगत सात वर्षों में भी संशोधन नहीं किया जा सका।

इन गणगच्छों के प्रचलन का बहुत पुराना जैन इतिहास विद्यमान है आचार्य अहर्द्वली ने एक बार पुण्ड्रवर्धन पुर में समस्त श्रमण संघ के मुनियों के सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें सभी श्रमण सम्मिलित हुए , सम्मेलन के प्रारंभ से पूर्व आचार्य अर्हद्वलि ने पूछा सभी मुनिजन आ गये हैं? तो उत्तर मिला हम सब अपने गणों गच्छों सहित उपस्थित हो गये हैं। तब आचार्य श्री को आभास हुआ कि अब जैन धर्म विभिन्न वर्गों में ही बंटकर रह सकेगा अतः उन्होंने जो जहां से आये थे उनकी तदनुरुप संज्ञाए सुनिश्रित कर दी जैसे जो गुहाओं से आये थे उन्हें कुछ को नंदि तथा कुछ को वीर अंत संज्ञा दे दी, जो अशोक वाटिक़ा से पधारे थे उनमें से कुछ को अपराजित और कुछ को देव अंत संज्ञा दे दी, जो पंच स्तूप से आये थे उन्हें पंच स्तूपान्वयी कहा उनमें से कुछ को सेन

और कुछ को भद्र अंत संज्ञा दे दी इसी तरह विभिन्न संघों, गणों गच्छों और शाखाओं की स्थापना सुनिश्चित हो गई। विस्तार के लिए इन्द्रनंदी आचार्य के श्रुतावतार ग्रन्थ में ९० से १०२ श्लोकों को देखा जा सकता है।

एक शब्द देव निर्मित हैं जो हर तीर्थंकर के समोशरण की रचना देवाधिपति इन्द्र ही करता है अतः यह देव निर्मित कहलाया। भ. पार्श्वनाथ के समवशरण की मथुरा में रचना हुई हो और उसका ही अंश रूप यह स्तूप बाकी बचा रह गया हो और यह देवनिर्मित कहलाया जो सोने व रत्नों का देवों ने बनाया था। जिन्होंने इसका जीर्णोद्धार कराया उन तक को भी इसकी प्राचीनता का ज्ञान नही था, वप्पभट्टसूरि ने भी मथुरा के जैन स्तूपों की चर्चा की है । इस तरह अकबर के शासन काल तक यहाँ जैन स्तूप बनते रहे। अकबर की टकसाल के प्रमुख अधिकारी कोलभटानिया (अलीगढ़) के साहु टोड़र जब जम्बूस्वामी की निर्वाण स्थली के दर्शनार्थ पधारे तो यहां के दस - बीस नहीं अपितु इन से अधिक जैन स्तूपों की जीर्ण दशा देखकर उन्हें बड़ा कष्ट हुआ और उन्होंने उन सभी जीर्ण-शीर्ण स्तूपों का जीर्णोद्धार कराया तथा जैन पौराणिक कथा के अनुरुप कुल ५१४ जैन स्तूपों का निर्माण कराया। विस्तार के लिए अर्हद्वचन में प्रकाशित मेरा पुरस्कृत लेख देखें। यदि यह बौद्ध स्तूप है तो फिर इसे जैन साक्ष्यों में सम्मिलित कर लेने का भी तो कुछ कारण होना चाहिए?

इस तरह 'प्रतिभावो द्वे थूपे' देव निर्मित प्र. (तिष्ठिताः) से ऐसा प्रतीत होता है कि दो जैन स्तूपों में दो जैन प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हुई हों ऐसा मेरा अनुमान है कि इनके अतिरिक्त तीन स्तूप और रहे होंगे जिन्हें कराल काल ने कबलित कर डाला, अन्यथा यह पंच स्तूप कहलाता रहा हो। इस सब तर्कों और अकाट्य प्रमाणों से श्री शर्मा जी सहमत होंगे और उस एक छोटी सी घुंडी का व्यामोह त्याग कर पिछले सौ वर्षों से चली आ रही वोद्वे की कठिन समस्या के सरल समाधान बोद्वे ढूंढ लेने के आग्रह से विभुक्त होकर प्राचीन इतिहास और पुरातत्व को भ्रष्ट होने से बचा लेगें।

सधन्यवाद!

मलयासुन्दरी चरित्र

समय देख बड़ी नम्रता के साथ गुणवर्मा ने कहा महाराज विजयचन्द्र? मुझे राज्य या राज्य की किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है, परन्तु यदि आप इस उपकार का बदला देना ही चाहते हैं तो चन्द्रावती नगरी में जो आप लोभाकर और लोभानन्दी को स्तंभितकर आये हैं वे मेरे पूज्य पिता और चाचा हैं उनका अपराध क्षमा कर उन्हें बन्धन मुक्त कीजिए।

यह बात सुनते ही विजयचन्द्र आश्चर्य चकित हो गया! अहा! बिष वृक्ष से अमृत फल की उत्पत्ति! गुणवर्मा! क्या आप सच कहते हैं? क्या सचमुच ही वे आपके पिता और चाचा थे? ओ हो! उनका ऐसा आचरण और आपका यह परोपकारी स्वभाव ! अहा! कुदरत ने कैसी विचित्र सृष्टि की रचना की है।

गुणवर्मा ने गर्दन झुकाकर जबाब दिया हाँ, महाराज! वे मेरे पिता श्री और चाचा साहब हैं! महाराज! कर्मों की विचित्र गति है। आप कृपा कर उन्हें शीघ्र ही बन्धन मुक्त करें।

विजयचन्द्र - गुणवर्मा! क्या कहते हो! मुझ पर किये हुए आपके उपकार के सामने यह कुछ भी बड़ी बात नहीं है। मैं इससे भी अधिक आपका कार्य करने के लिए तैयार हूँ। परन्तु इतनी बात है कि यह कार्य विशेषतः तुम्हारे खुद के ही स्वाधीन है। इसका कारण मैं आपको बतलाता हूँ आप सावधान होकर सुनें।

इस शहर के नजदीक जो यह एक श्रृंग नामक पर्वत दिख रहा है इसी गुफा में देवता अधिष्ठित एक सुगुप्त कूपिका है। मुखद्वार नेत्र पुट के समान बारंबार विकसित होकर बन्द होता है। उस कूपिका में से स्तंभित हुए मनुष्य का पुत्र पानी लेकर यदि अपने पिता पर तीन दफे छिड़के तो वह तुरन्त ही बन्धन मुक्त हो सकता है। परन्तु यदि पानी ग्रहण करते हुए डर जाय तो पानी लेने वाले की मृत्यु हो जाती है। गुणवर्मा!

पिता को बन्धन मुक्त करने के लिए इसके सिवाय और कोई उपाय नहीं है।

पितृभक्त, साहसिक, गुणवर्मा ने कहा - महाराज! मैं यह काम करके भी पिता को बन्धन मुक्त करूँगा। आप इस कार्य में मेरी सहायता करें।

गुणवर्मा की अलौकिक पितृभक्ति देखकर विजयचन्द्र बहुत खुश हुआ। उपकारी पर प्रत्युपकार करने के लिए पानी ग्रहण करने की सर्व सामग्री तैयार कर विजयचन्द्र गुणवर्मा को साथ लेकर उस कूपिका के पास गया। विकसित हुई उस कूपिका में पानी लेने के लिये विजयचन्द्र की सहायता से मंचिका पर बैठकर गुणवर्मा अन्दर उतरा। निर्भयता से उसमें से जलपात्र भरकर गुणवर्मा ने रस्सा हिलाया, सावधान होकर शीघ्रता से विजयचन्द्र ने गुणवर्मा को कूंपिका में से ऊपर खींच लिया।

मंत्र प्रभाव से सेवक रूप बने हुए राक्षस ने घोड़े का रूप धारण किया। उस पर सवार होकर दोनों जने क्षणमात्र में चन्द्रावती पहुँचे। देवता अधिष्ठित लाया हुआ पानी गुणवर्मा द्वारा लोभाकर पर तीन बार छिड़कने से वह बन्धन मुक्त हो गया। परन्तु लोभानंदी अपुत्रीय होने के कारण पूर्ववत् ही दुःखित रहा। क्योंकि उस मंत्र के कल्प के अनुसार अपने पुत्र के सिवाय अन्य किसी से उसका दुःख दूर होना असम्भव था।

अपने परम उपकारी और मित्र गुणवर्मा को विजयचन्द्र ने प्रधान पद की मुद्रा और कुछ देश आदि देने के लिए अति आग्रह किया, तथापि निर्लोभी गुणवर्मा ने उसको बिल्कुल स्वीकार न किया। बल्कि उल्टा विजयचन्द्र का विशेष सत्कार करके उसके रस का तूम्बा उसे वापिस दिया।

कृतज्ञ विजयचन्द्र ने वह रस का तूम्बा अति आग्रह पूर्वक गुणवर्मा को ही वापिस दे दिया। गुणवर्मा ने भी विजयचन्द्र के विशेष आग्रह से उस रसायन रस को ग्रहण किया। इस प्रकार उन दोनों की मित्रता में है। किसी भाग्यवान मनुष्यों की गोद में ही उत्तम बालक सोते हैं, क्रीड़ा करते हैं, मुग्धवचन बोलते हैं, और कदम पर स्खलना पाते हुए माता पिता से आ चिपटते हैं। सचमुच संसार में वे ही मनुष्य धन्य हैं जिनके

अधिक वृद्धि हुई। यद्यपि ऐसे परोपकारी नर रत्न और मित्र का वियोग सहन करना दुसह्म था। तथापि राज्यादि कार्य भार की चिन्ता से विजयचन्द्र को वापिस स्वदेश जाना पड़ा।

महाराजा वीरधवल कहते है देवी! यह वृत्तान्त अभी थोड़ी ही देर पहले स्वयं गुणवर्मा ने मेरे पास आकर मुझे सुनाया है। मेरे राज्य में उसके पिता और चाचा के किये हुए विश्वासघात के महान् अपराध की उसने बारंबार क्षमा याचना की। गुणवर्मा की पितृभक्ति, परोपकारता, निर्लोभता, उदारता, निडरता और गंभीरतादि गुणों से मुझे बड़ा सन्तोष हुआ। इस कारण उसके पिता और चाचा के किये हुए अपराध को मैने क्षमा कर दिया। अभी कुछ देर पहले ही गुणवर्मा मुझ से मिलकर अपने घर गया है। प्रिये! जब से मैंने गुणवर्मा और विजयचन्द्र का इतिहास सुना है तब से मेरे मन में अनेक प्रकार के संकल्प - विकल्प पैदा हो रहे हैं। मेरी शान्त वृत्तियां अशान्त हो उठी हैं, और मुझे बिलकुल चैन नहीं पड़ती। प्यारी ! अब तुम मेरी चिन्ता का कारण भली प्रकार समझ गई होगी।

शूरचन्द्र राजा के पुत्र विजयचन्द्र ने अपने गये हुए राज्य को फिर से प्राप्त किया, और भाई के दुश्मन से बदला लिया। गुणवर्मा ने मृत्यु के समान आपत्ति को स्वीकार कर संकट रूप समुद्र में डूबते हुए अपने पिता का उद्धार किया।

प्रिय देवी! जिनके पुत्र हैं वे मनुष्य धन्य हैं। अभी तक हमारे घर एक भी पुत्र - पुत्री का जन्म नहीं हुआ; यह मेरी चिंता का मूल कारण है। प्रिय कोमलांगी! मेरे बाद मेरे कुल में देव गुरू की पूजा कौन करेगा? धर्मस्थानों का उद्धार कौन करेगा? और कौन मेरे वंश को धारण करेगा! प्रिय सुलोचने! मेरे से ही मेरे पूर्वजों का वंश - वृक्ष का उच्छेद होगा। यही चिंताग्नि मेरे ह्रदय मंदिर में प्रज्वलित हो रही है। बस इसके सिवाय मेरे इस महान् शोक का दूसरा कोई कारण नही हैं।

पति के दुःख से दुःखित हुई चंपकमाला ने नम्रता पूर्वक मीठे वचन से कहा प्राणनाथ! यंह दुसह्म दुःख आप को और मुझे समान ही हैं। किसी भाग्यवान मनुष्यों की गोद में ही उत्तम बालक सोते हैं, क्रीड़ा

करते हैं, मुग्धवचन बोलते हैं, और कदम कदम पर स्खलना पाते हुए माता पिता से आ चिपटते हैं। सचमुच संसार में वे ही मनुष्य धन्य हैं जिनके घर में, पैरों में घुंगरुओं के रणझणाट करते हुए दो चार बच्चे क्रीड़ा करते हैं। उनके जन्म कृतार्थ हैं जिन्होंने सद्गुण संपन्न कुलदीपक उत्तम पुत्रों को जन्म दिया है। इस प्रकार बोलते हुए अपत्यमोह से मोहित होने के कारण रानी का ह्रदय गद्गद् हो गया, और उसके नेत्रों से अश्रु धारा बहने लगी। परन्तु कार्य कारण भाव को समझने वाली रानी चंपकमाला स्वयं धीरज धारण कर संतान - मोह के दुःख में पड़े हुए पति को धीरज देने लगी।

प्रिय देव! पुत्रादि संतति पुण्य के प्रभाव से ही मिल सकती है, मात्र मनोरथ करके बैठे रहने से और पुण्य कार्य में उद्यम किये बिना कार्य सिद्धि कैसे हो सकती हैं? इसलिए हमें आज से ही पुण्यवृद्धि करने का प्रयत्न करना चाहिये। परन्तु उस कार्यसिद्धि में रुकावट करने वाले विघ्नों को दूर करने का सतत प्रयत्न करना चाहिये। इसलिए हे प्राणेश्वर! चिंता का परित्याग करो। चिन्ता से विक्षिप्त चित्त वाला मनुष्य, अपने इच्छित कार्य में सफलता नहीं पा सकता है। हे प्राणवल्लभ! मुझे इस समय एक उपाय सूझता है और वह यह है कि पुत्र प्राप्ति के लिए हम दोनों को किसी देव की आराधना करनी चाहिए।

महारानी चंपकमाला के समय सूचक, और धैर्य गर्भित वचनों से महाराज वीरधवल को अतिहर्ष पैदा हुआ। अतः वे प्रसन्न होकर बोले - प्यारी चंपकमाला, तुम्हारे जैसी ही उत्तम सहचारिणी, पति के दुःख में हिस्सा लेने वाली और ऐसे समय में धीरज देने वाली, पतिसुखपरायणा, सती स्त्रियां बहुत कम होगी प्रिये! तुम्हारे जैसी सद्गुण संपन्न और श्रेष्ट बुद्धि देने वाली पत्नी को पाकर मैं आज अपने आपको कृतार्थ समझता हूँ।

प्यारी मृगाक्षी! आज तुम ने पुत्र प्राप्ति के लिए जो पुण्यवृद्धि करने का उत्तम रास्ता बतलाया है वह सचमुच ही प्रशंसनीय है। कारण बिना कार्य के सिद्धि नहीं होती। संसार के तमाम प्रसंगों में इस बात का अनुभव होता है, तब फिर यह भी एक सांसारिक ही प्रसंग है अतः आज

से ही हमें देव गुरु धर्म की भक्ति और दान पुण्य त्याग तपस्या आदि में लग जाना चाहिए। पुण्य की प्रबलता से एवं देवाराधना करने से अन्तरायकर्म दूर होगा, जिससे हमें संतान प्राप्ति की इच्छा भी सफल हो जायगी इस बात पर मुझे संशय रहित विश्वास है। तो प्यारी! यह बताओ कि हमें किस देव की आराधना करनी चाहिये?

रानी चंपकमाला - प्राणवल्लभ! आपने यह प्रश्न क्यों किया? देवाधि देव परम पूज्य ऋषभ देव प्रभु हमारे इष्ट देव ही हैं, क्या उन्हें आप नहीं जानते?

महाराजा वीरधवल - प्राणप्यारी! मैं अपने परम पूज्य देवाधि देव ऋषभ प्रभु को भली भांति जानता हूँ तथापि वे लोकोत्तर देव होने से वीतराग देव है। सांसारिक कार्य के निमित्त लोकोत्तर देव की आराधना करने से सम्यक्त्व में मलीनता आती है। यह बात हमने पहले सद् गुरु के मुख से सुनी थी, तब वे राग द्वेष रहित होने के कारण हमें संतति सुख किस तरह देगें? इसी कारण मैंने यह प्रश्न किया है।

चंपकमाला - स्वामिन्! आप की यह शंका योग्य ही है, तथापि संतति प्राप्त के निमित्त अन्तराय कर्म को क्षय करने के लिए देव की आराधना की जाय तो मिथ्यात्व प्राप्ति का या सम्यक्त्व दूषित होने का संभव नहीं! प्राणेश! वीतराग देव संतति सुख किस तरह दे सकते हैं इस बात का निराकरण भी मैने गुरु महाराज के मुख से सुना हुआ है कि प्रत्यक्ष तया वीतराग देव कुछ नहीं देते, तथापि जो वस्तु मिली है वह पुण्योदय या अन्तराय कर्म को क्षय करने रूप जिनेंद्र देव का पूजन, स्मरण या आराधना की कारण रूप है।

रानी चंपकमाला के पूर्वोक्त गंभीर और सारगर्भित वाक्य सुनकर महाराज वीरधवल बहुत ही खुश हुए। रानी की बुद्धिमत्ता देख कर उनके अन्तः करण में उसके प्रति और भी अधिक प्रेम और सम्मान ने स्थान प्राप्त किया। उन्होने उसी दिन से जिनेंद्र देव की आराधना करनी शुरू कर दी। अब वे अपना समय सुख से व्यतीत करने लगे।

चम्पकमाला का हरण

शयनागार में महाराजा वीरधवल और महारानी चंपकमाला सुख पूर्वक बैठे आपस में विनोद से बातचीत कर रहे थे। इतने ही में अकस्मात् दीन मुख करके रानी चंपकमाला बोल उठी महाराज! आज मेरा दाहिना नेत्र फड़क रहा है। न मालुम इस अमंगल निमित्त से मेरे उपर क्या कष्ट आयगा? क्या मुझ पर बिजली पड़ेगी? क्या मेरा सर्वस्व लुट जायगा? या कोई भयंकर बीमारी आयेगी? मुझे इस समय न जाने क्या हो गया? ह्रदय बिलकुल अशान्त और व्याकुल हो रहा है चित्त में बेचैनी बढ़ती जा रही है।

महाराजा वीरधवल बोले - प्यारी! स्त्रियों का दाहिना नेत्र फड़कना अमंगल माना गया है। तथापि तुम बिलकुल निर्भय रहो। किसी प्रकार के अमंगल की शंका मत करो। जिस तरह सूर्य के उदय में अन्धकार नहीं आ सकता उसी प्रकार मेरे राज्य करते हुए तुझे किसी भी तरह का कष्ट नहीं हो सकता। फिर भी दैव वशात् अगर तुझे कुछ भी अमंगल हुआ तो पतंग के समान तेरे साथ मुझे भी अग्नि का शरण होगा, इत्यादि शब्दों से महारानी को धीरज देकर महाराजा बीरधवल राजसभा में जाकर राज्य कार्य में प्रवृत्त हो गये।

इधर ज्यों ज्यों रानी का दाहिना नेत्र विशेष फड़कने लगा त्यों त्यों उसे महल में, उद्यान में और बगीचे में कही पर भी शांति न मिली। वह उदासीन वृत्ति से मध्यान्ह समय महल में अपने पलंग पर लेट गई और धीरे - धीरे निद्रा देवी के आधीन हो गई।

थोड़ी देर के बाद दासी वेगवती हाथों से मस्तक पीटती हुई, कदम कदम पर स्खलना पाती हुई और आंसुओं से ह्रदय को भिगोती हुई, राजसभा में आई और हाथ जोड़ कर कहने लगी - महाराज! महारानी चंपकमाला की —— यह अर्ध वाक्य सुनते ही शोकार्त दासी को देख कर भयभ्रांत हो महाराजा बीरधवल सहसा बोल उठे -हा देवी? दैव वशात् क्या तुझे अमंगल हुआ? क्या तेरा फड़कता हुआ दाहिना नेत्र सचमुच ही सफल हुआ? अरे वेगवती जल्दी बोल! रानी चंपकमाला को क्या हुआ? मेरा स्नेही ह्रदय विलम्ब नहीं सहन कर सकता।

रूद्ध कंठवाली वेगवती ने रूदन करते हुए जबाव दिया, हे धीर वीर शिरोमणि! महाराज! यह समाचार सुनने के लिए अपने कान और ह्रदय को वज्र समान कठोर करलो। महारानी का जब दाहिना नेत्र विशेष फड़कने लगा तब उसे महल में बिलकुल शांति न मिली, इससे हम सब शहर के बाहर उद्यान में गयी, परन्तु बाग बगीचे वगैरह विश्रान्ति के अनेक स्थानों में फिरते हुए भी महारानी के चित्त को चैन न पड़ी, तब फिर हम सब वापिस महलों में आई, महारानी शयन गृह में जाकर पलंग पर सो गई और मुझे उन्होंने बगीचे से पुष्प और पत्ते लाने के लिए भेज दिया। महारानी को निद्राधीन हुई देख कर तमाम परिवार खाने पीने आदि कार्य में लग गया। मैं थोड़े ही समय बाद बगीचे से उनके उपयोगी पत्ते और पुष्प लेकर वापिस आई। शयन गृह में जाकर देखा तो महारानी पत्थर की मूर्ति के समान निःचेष्ट पड़ी हुई हैं। मालूम नहीं कि महारानी के प्राण, रोग या विष प्रयोग, अथवा अन्य किसी भी महान् दुःख से गये है।

हलाहल जहर के समान दासी के मुख से पूर्वोक्त अमंगल वचन सुनते ही राजा वीरधवल सहसा मूर्छित हो जमीन पर गिर पड़े। पास में रहे हुए मंत्री मंडल द्वारा शीतल वायु और द्रवित चंदन के सिंचाई करने से कुछ देर बाद महाराज होश में आये। जागृत अवस्था में आते ही महाराजा बीरधवल रानी के वियोग से व्याकुल हो निम्न प्रकार विलाप करने लगे।

अरे निर्दय दैव! तूनें मुझे प्रथम ही क्यों न मार डाला! जिससे रानी के अमंगल की बात मुझे अपने कानों से सुनने का प्रसंग न आता। अरे दुर्देव? तूनें छिपकली की पूंछ के समान तड़फती हुई मेरी अर्ध आत्मा को छेदन कर डाला। हे तक्ष देवी? दाहिने नेत्र फड़कने के बहाने से तूनें अपना मृत्यु प्रथम ही बतला दी थी तथापि मैं तेरा रक्षण न कर सका। तेरे सिर पर आने वाली विपत्ति को जानते हुए भी मैं उसका प्रतिकार न कर सका। इसलिए मैं महा अज्ञानी बुद्धिहीन और घोर पापी हूँ। अगर ऐसा न होता तो मैं न होता तो मैं तेरी बात पर विश्वास रख कर प्रथम से ही तेरे रक्षण का कुछ उपाय अवश्य करता। इस प्रकार अपने आप की निन्दा करते हुए और नेत्रजल से जमीन को सिंचन करते हुए राजा

ने तमाम राजपरिवार को रुलाया। इस समय राजा बीरधवल की शोकातुर अवस्था में रानी के वियोग से पागल की तरह हालत हो गई।

राजा की यह स्थिति देख कर स्वामी के दुःख से दुःखित हुआ मंत्रीमंडल गद् गद् कंठ से हाथ जोड़ राजा को विनती करने लगा। महाराज धैर्य धारण करो और शीघ्र ही महल में चल कर महारानी को देखो कि उसके शरीर की अवस्था कैसी है। जहर के प्रयोग से भी मनुष्य श्वासोश्र्वास रहित हो जाता है, क्योंकि उसके प्राण, दिमाग या नाभी में संस्थित हो जाते हैं। उन्हें चल कर देखना चाहिए कि रानी की ऐसी ही हालत तो नहीं हो गई है?

मंत्री मंडल की प्रेरणा से कदम कदम पर स्खलना पाता हुआ राजा रानी के महल में आया। वहां आकर देखा तो सचमुच ही पाषाण मूर्तिवत् रानी का निःचेष्ट कलेवर पड़ा है। रानी को ऐसी स्थिति में देखते ही राजा मूर्छित हो जमीन पर गिर पड़ा। ठंड़े पानी के प्रयोग से कुछ देर बाद नेत्र खोल कर राजा बैठा हुआ। परन्तु सामने ही रानी की वैसी अवस्था देखकर फिर मूर्छित हो गया। इस तरह बारं बार मुर्छा से उठना और फिर मूर्छित हो जाना, राजा ऐसी भयंकर अवस्था का अनुभव करने लगा। राजकुल के मनुष्यों ने रानी के तमाम शरीर को अच्छी तरह देखा परन्तु उसके शरीर में कहीं पर भी सर्प आदि जहरी जानवर का डंस मालुम न दिया और न किसी प्रकार का विष प्रयोग भी जानने में आया।

मित्रों! रानी का सारा शरीर सर्वथा अक्षत है। जहर का प्रयोग भी मालुम नहीं होता। क्या रानी के प्राण किसी ह्रदय दुःख से या किसी दुष्ट देव के कोप से निकल गये होंगे? अगर ऐसा न हो तो तमाम शरीर सर्वथा अक्षत न होना चाहिये। रानी के मोह से मोहित होकर महाराजा अवश्य मृत्यु प्राप्त करेगें और राजा की मृत्यु से इस राज्य का सर्वनाश हो जायेगा क्योंकि राज्य की धुरा धारण करने वाला एक भी राजकुमार नहीं है।

सुबुद्धि नामक प्रधान मंत्री ने अपने आश्रित राज्य कर्मचारियों के समक्ष पूर्वोक्त कथन कर सेना पति से कहा इसी वक्त हमें किसी भी प्रयोग से महाराजा को ऐसी स्थिति में धैर्य दिलाने के लिए समय व्यतीत

होने के लिए समय व्यतीत करना चाहिए क्योंकि समय व्यतीत होने से हमें राजा को बचा लेने का कोई भी उपाय मिल जायेगा। सेनापति बोला - महानुभाव ! ऐसी हालत में किस तरह समय व्यतीत किया जाय? सुबुद्धि बोला राजा हमें कहना चाहिये कि रानी को जहर चढ़ गया है और वह अभी जीवित है, उसके प्राण नाभी में संस्थिर है। इसलिए मणिमंत्र औषधादि के द्वारा उसके जहर उतारने का प्रयोग करना चाहिए। इस विचार से सबकी सम्मति मिलने से प्रधान मंत्री राजा के पास आकर बोला - महाराजा! महारानी अभी जीवित है। उसे जहर चढ़ा हुआ है उसके प्राण नाभी में रहे हुए हैं।

यह वाक्य सुनते ही राजा मानों अमृत से सिंचन किया गया हो त्यों उश्वास प्राप्त कर निद्रा से जागृत होकर बोला अरे सेवकों! जल्दी दौड़ो; विष उतारने वाले मनुष्यों को और भंडार में से जड़ी बूंटी लाओ! विष दूर करने वाली मणि लाओ! शहर में जितने मंत्रवादी हों उन सबको बुलाओ और रानी को जल्दी विष रहित करो।

राजाज्ञा मिलते ही जड़ी बूंटी, मणि और मंत्रवादी तमाम सामग्री उपस्थित हो गई। प्रधान मंत्री की आज्ञानुसार रानी को एकान्त में स्थापन कर शीघ्र ही मंत्र वादियों ने मंत्र प्रयोग प्रारंभ किये। अब राजा विचार करता है कि रानी अब श्वास लेगी, उसकी अभी आंखें खुलेगी। इस प्रकार मोह से व्याकुल राजा को विचार करते हुए आधा दिन और कुछ कष्ट से सारी रात व्यतीत हो गई। बुद्धिमान् मंत्रिमण्डल ने अपनी बुद्धि के प्रयोग से इतना समय तो व्यतीत करा दिया, परन्तु रानी के शरीर परं किये हुए प्रयोगों का कुछ भी असर नहीं हुआ। प्रातःकाल होने पर तमाम मंत्रिमंडल निरुपाय हो विचार करने लगा, अब हम राजा को मृत्यु से कैसे बचावें? रानी के स्नेह बन्धन में बँधा हुआ राजा अवश्य ही अपने प्राण खोयेगा। सच्चे प्रेम वालों के लिए प्रेमी का सदा के लिए वियोग होने पर मृत्यु के सिवाय अन्य कोई उपाय नहीं। हा! हा! रानी के मृत्यु से यह राज्य, राष्ट्र, कोष, चार प्रकार की सेना तमाम प्रजा और हम अनाथ हो जायेंगे। इस चिंता समुद्र में डूबे हुए राज्य के तमाम प्रधानादि राज्य परिवार राजा के प्राण बचाने में निरुपाय हो गये।

पूर्ववत् अपनी वल्लभा को चेष्टा रहित देख कर राजा का फिर से ह्रदय भर आया और वह गद् गद् स्वर से विलाप करने लगा। हे देवी! तुझे सचेतन करने के ये तमाम प्रयोग निष्फल हो गये। अब तू किस उपाय से जीवित होगी! हे प्रिये! इतने समय से इतने सारे उपाय करने पर भी तू क्यों नहीं बोलती! मालूम होता है कि तू मुझे यहां अकेला छोड़कर परलोक चली गई है। प्यारी! तेरे बिना यहां पर मेरी एक घड़ी एक महिने के समान बीत रही है और दिन वर्ष के समान मालुम हो रहा है, तब फिर मेरा शेष आयुष्य किस तरह व्यतीत होगा! हे मृगाक्षी! मेरी शक्ति धिक्कार के पात्र है, क्योंकि तुझ पर आने वाली इस घोर आपत्ति का पता लगने पर भी मैं तेरे रक्षण के लिए कुछ भी न कर सका। प्यारी! तूं कहाँ चली गई? एक दफे तूं मुझे अपना स्थान तो बता जा, जिससे मैं तेरा मुख कमल देखकर सुखी बनूं। इस तरह विलाप करते हुए दुःखित राजा को फिर से पूर्ववत् मूर्छा आ गई। शीतोपचार करने से जागृति में आया हुआ राजा मंत्रियों से बोला-

हे मंत्रिवरो? आप लोग सावधान होकर मेरी बात सुनो। इतना लम्बा समय बीतने पर भी आप लोग रानी को जीवित नहीं कर सके। मैंने रानी के साथ ही मरना निश्चय किया है। रानी के वियोग में मेरे प्राणदेह धारण करने के लिये सर्वदा असमर्थ हैं। मंत्रिवरों! अब विलम्ब न करो, गोलानदी के किनारे पर काष्ठ की एक चिता जल्दी तैयार करो जिससे कि रानी के वियोग में दग्ध हुई अपनी आत्मा को चिता में प्रवेश करके शांति दूं।

आंसुओं से पृथ्वी को भिगोते हुए मंत्री लोग बोले हा हा! महाराज! आज हम सब के सब जीते हुए भी मृतक समान हो रहे हैं। सूर्य अस्त होने पर क्या कभी कमलाकर विकसित रह सकते हैं ? पिता के मरने पर निराधार बच्चों की क्या दशा होगी ? पानी बिना ज्यों मछलियां तड़फ तड़फ कर प्राण खो देती हैं, वैसे ही हे नाथ ! आप के बिना पुण्य रहित अनाथ के समान हमारी क्या दशा होगी ? कृपालू ! हम पर प्रसन्न होकर आप इस मोह को कम करो और अपने किये हुए निश्चय को स्थगित करो। अर्थात् मरने का विचार छोड़ कर चिर काल तक राज्य पालन

करो। आप के बाद शत्रु लोग इस राज्य को ग्रहण कर लेंगे। प्रजा निराधार होकर संकट में पड़ जायगी।

महाराज! विचार करो, आप जैसे वीर पुरुष भी यदि धैर्य का त्याग करेंगे तो निराधार होकर धैर्यता किसका आश्रय लेगी। आप यह भली प्रकार जानते हैं कि रानी के प्राण रहित होने में कर्म ही कारण भूत है। इससे संसार की असारता प्रकटतया मालुम होती है, संसार की कोई भी वस्तु चिरकाल तक एक ही स्वरुप में नहीं रह सकती। इसीलिये महापुरुषों ने फर्माया है कि -

राजानः खेचरेन्द्राश्च, केशवाश्चक्रवर्तिनः।
देवेन्द्रा वीतरागाश्च, मुच्यन्ते नैव कर्मणा।।

अर्थात् राजा, विद्याधर, वासुदेव, चक्रवर्ती देवेन्द्र और वीतराग को भी कर्म नहीं छोड़ता।

अहा! ऐसे सामर्थ्य वाले महापुरुषों को भी किये हुए कर्म का फल भोगना पड़ता है, तब फ़िर अन्य पुरुषों की तो बात ही क्या कहना? महाराज! आप स्वयं इस कर्म सिद्धान्त को जानते हैं, फिर भी इस प्रकार पतंग के समान अज्ञान मृत्यु से मरना चाहते हैं, यह आप जैसे विवेकी पुरुषों के लिए योग्य नहीं है।

मंत्री के वचन सुनकर शोक से कुंठित और विचार शून्य हृदयवान् राजा ने उत्तर दिया-मेरे हितेच्छु मंत्रीश्वरों! आप मुझे जो बोध दे रहे हो, कर्म की परिणति, संसार की असारता और अनित्यता जनाते हो यह सब कुछ मैं जानता हूँ, परन्तु मोह की दशा विचित्र है। रानी के मोह से मोहित आत्मा, मैं इस समय युक्तायुक्त कुछ भी नहीं विचार कर सकता। तथा जब रानी का दाहिना नेत्र फड़क रहा था और उसने मुझे अपने भावी अनिष्ट की सूचना दी थी, तब मैने उसके साथ ही अग्नि शरण होने का उसे वचन दिया है।

अपने मुख से बोला हुआ सुलभ कार्य भी मुझसे न हो सके तो असत्यवादी मनुष्यों की श्रेणी में मेरा सब से पहला नाम होगा। तुम्हें मालुम होगा कि जन्म से लेकर आज तक मेरा कोई भी वचन अन्यथा नहीं हुआ। अगर इस समय मैं अपने वचन के अनुसार रानी के साथ

अग्नि शरण होकर न मरूं तो मेरा सत्यव्रत कैसे रह सकता है? इसलिए प्यारे मंत्रिवरों! मेरे और रानी के लिए एक बड़ी चिता तैयार कराओ, जिसमें मैं तमाम दुःखों को भस्मीभूत करूँ। महाराजा को अनेक प्रकार से समझाया गया परन्तु वह अपने मरण के निश्चय से जरा भी शिथिल न हुआ, तब तमाम मंत्रिमण्डल मौन धारण कर उदासीनता से एक तरफ खड़े हो गये। महाराज फिर से बोले - मंत्रिश्वरों! उदास होकर क्यों खड़े हो? तुम भी इस प्रकार निष्ठुर क्यों बनते हो? मैं कदापि जीवित न रहूंगा। समय बिता कर मुझे विशेष कष्ट क्यों पहुँचाते है। राज़ा के वचन सुन कर कुछ भी उत्तर न देते हुए सारा ही मंत्रि मण्डल जमीन पर दृष्टि लगाये नतमस्तक होकर ज्यों का त्यों खड़ा रहा।

चिता तैयार कराने के लिए मंत्रिमण्डल की उपेक्षा देख कर राजा ने अपने दूसरे मनुष्यों को उस कार्य को करने की प्रेरणा की। उन मनुष्यों ने निरुपाय होकर रानी के मृतक शरीर को स्नान, कराकर, पुष्पादिक से अर्चन कर शिविका में स्थापन किया। तमाम परिवार सहित राजा उस शिविका के साथ राजमहल को सूना छोड़ गोला नदी की तरफ चल पड़ा।

यह घटना शहर में चारों तरफ बड़ी शीघ्रता से फैल गई। रानी के विरह दु;ख से दुःखित होकर आज महाराज बीरधवल अग्नि में प्रवेश कर मरने के लिए जा रहे हैं। यह समाचार सुनते ही नगर के आबाल वृद्ध तमाम मनुष्य हर एक जगह करुण स्वर से विलाप करने लगे। उस दिन नगर के तमाम मनुष्यों ने अन्न तो क्या जलपान तक भी न किया। तमाम शहर में इस दुर्घटित घटना के समाचार से शोक की घनघटा छा गई। नगर निवासी राजा के शोक से श्याम मुख वाले देख पड़ते थे। किसी भी मनुष्य के चेहरे पर प्रसन्नता देख नहीं पड़ती थी ! उस रोज सर्वस्व खो गये हुए मनुष्य के समान सारे शहर के मनुष्य शून्य हृदय वाले मालूम होते थे। निरुपाय बने हुए मंत्रीमण्डल के शोक का कुछ पार ही न था। कहां तक कहा जाय! उस दिन राजकुल के सहित तमाम स्त्री पुरुषों में दुर्दिन के समान उदासीनता ने भयंकर रूप धारण कर लिया था।

नगर के बड़े से बड़े प्रजाजनों ने महाराजा के चरणों में पड़ कर उन्हें अपने निश्चय से पीछे हटने की प्रार्थना की। परन्तु उन्होंने किसी की प्रार्थना पर लक्ष्य न दिया। मंत्रिमंडल और प्रजाजन निराश हो गये।

रानी की शीविका के साथ महाराजा बीरधवल अपने निश्चय को पूरा करने के लिये गोला नदी के किनारे आ पहुंचे।

रानी के शव की पालकी एक तरफ रख कर उन मनुष्यों ने चिता की लकड़ियो को ठीक करना शुरु किया। इधर राजा ने भी स्नान करने के लिये गोला नदी में प्रवेश किया। इस समय राजा के चेहरे पर पूर्ण उत्साह और उत्सुकता दिखायी पड़ती थी। वे मन में विचार कर रहे थे कि चिता जल्दी जल उठे तो मैं स्नान कर शीघ्र ही उसमें प्रवेश करूँ। इन्हीं विचारों के दरम्यान स्नान कर राजा बाहर आया। ठीक, इसी समय गोला नदी के प्रवाह में बहता हुआ एक बड़ा भारी सूखा हुआ काष्ठस्तंभ आ रहा था। उस सूखे हुए काष्ट स्तंभ को देख कर प्रधानमंत्री ने नदी में तैरने वाले मनुष्यों को हुक्म दिया कि यह जो नदी प्रवाह में लक्कड़ बहता हुआ आ रहा है इसे बाहर निकालो, क्यों कि यह सूखा हुआ होने से चिता के काम में आयेगा। मालुम होता है कि चिता की लकड़ियां कम आई हैं। मंत्री की आज्ञा पाकर तैरने वाले मनुष्यों ने शीध्र ही नदी प्रवाह में प्रवेश किया और थोड़ी ही देर में उस सूखे हुए काष्टस्तंभ को उन्होनें बाहर निकाल लिया। किंनारे पर लाये हुए उस काष्टस्तंभ को देखने के लिये महाराज बीरधवल भी उसके समीप आये।

क्रमशः

संकलन-

नकली और कीमती साबुन

आप रोज इसे चेहरे और बाकी शरीर पर मलते हैं। इसकी सुगन्ध और शुद्धता के प्रचार में लाखों रुपए खर्च होते हैं। आइए देखें साबुन कितना शुद्ध होता है।

व्यावसायिक भाषा में पशु वसा दो प्रकार की होती है। जैसे कि गुर्दों और अन्य शारीरिक अंगों से प्राप्त वसा, जिन्हे वध वाली वसा कहा जाता है। क्योंकि वह गाय, भैंस, भेंड़, बकरी और सूअर के मारने पर प्राप्त होती है और वह वसा जो पशु के मरने पर उसके शरीर को छोटे व्यवसायी के हाथ बेचे जाने पर निकाली जाती है जिसे काटने वाली वसा कहा जाता है दोनों प्रकार की वसा को गरम कर चिकनाई का रूप दे दिया जाता है। इस चिकनाई वसा को हम या तो अपने आहार में इस्तेमाल करते हैं या मोंमबत्तियों में या फिर अपंने चेहरे पर। इसे टैलो वसा कहा जाता है। और इससे सड़े मांस की गंध नहीं आती है। क्यों कि भाप लगाते हुए इसे खुशबूदार बनाया जाता है।

आपके साबुन का मुख्य रचना तत्व क्या है? वह है सोडियम टैलोएट। इससे स्पष्ट होता है कि साबुन पशु वसा लगभग ७५ से ८५ प्रतिशत और तेलों के मिश्रण से तैयार किया जाता है। प्राक्टर एंड गैंबल पी. एड जी. कंपनी के शुद्ध आइवरी ब्रांड साबुन को लीजिये यह स्पष्ट रूप से पशु वसा में थोड़ा वनस्पति तेल मिलाकर बनाया जाता है। साबुन की रासायनिक अभिक्रिया क्या है? जब वसा की अभिक्रिया कास्टिक सोडा या ल्ये (एक रासायनिक घोल) के साथ होती है, तो ग्लिसरीन के साथ - साथ वसा के सोडियम लवणों का भी जन्म होता है। इस रासायनिक अभिक्रिया को सैपोनिफिकेशन कहते हैं और इसे प्राप्त करने के लिये साबुन उद्योग के हाथ जो भी चीज लगती है वह उसका इस्तेमाल करता है, जैसे - पशु अंग, ह्वेल मछलियां, समुद्री जो

सिवार, ऐवोकैडो और नारियल। हिटलर के यातना शिविरों में मानव शरीर से साबुन तैयार किया जाता था। अधिकांश अपारदर्शी साबुनों में वसा हो सकती है अगर उनके लेबुल में अन्यथा उल्लेख न किया गया हो। डव जैसे साबुनों में वसा के साथ थोड़ा तेल मिला दिया जाता है जिससे त्वचा में होने वाली खुश्की को कम किया जा सके।

पशु वसा साबुन का अनिवार्य रचना तत्व नहीं है। वसा कहीं से भी प्राप्त हो सकती है। परन्तु उद्योग मृत पशु की वसा को प्राथमिकता देता है क्योंकि वह बहुत अधिक सस्ती होती है और इस नाते प्रतिदिन हजारों पशु मारे जाते हैं। उद्योग का दावा है कि पशु वसा से निर्मित साबुन अपेक्षाकृत कड़े होते हैं क्योंकि पशु वसा का उबाल बिन्दु ज्यादा होता है।वसा युक्त साबुन के प्रयोग का कारण हमारा ढीलापन है। पश्चिम लंबे अरसे से पशु वसा का प्रयोग करता आ रहा है तो भारत भी उसका अनुकरण करने से पीछे क्यों रहे।अगर साबुन खरीदने वालों में से आधे से अधिक शाकाहारी हैं और शेष व्यक्ति भी हर सुबह वसा से अपना शरीर रगड़ना नहीं चाहते, तो स्वाभाविक है कि विज्ञापन इस बात को सुनिश्चित करें कि लोगों को वस्तुस्थिति की जानकारी कभी न हो सके। कोई भी साबुन निर्माता अपने पैकेट पर रचना तत्वों का उल्लेख नहीं करता। वसा युक्त साबुन के विकल्प सुलभ है। साबुन, वनस्पति तेल, नारियल तेल, बादाम तेल, जैतून तेल, ताड़ तेल, ग्लिसरीन, पुल के खुशबूदार तेल, व्यवसायिक ल्ये रसायन और कम मात्रा के बेकिंग सोडा से बनाया जा सकता है। ये सभी चीजें त्वचा के लिए बहुत अनुकूल हैं। वसायुक्त साबुन निर्माताओं द्वारा प्रस्तुत विज्ञापनों के प्रतिकूल ये साबुन काफी टिकाऊ और सस्ते होते है। मैं वसायुक्त साबुन चन्द्रिका का इस्तेमाल अरसे से करती आ रही हूं। ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी (क्रूरता विहीन सुन्दरता) नामक संगठन के पास ऐसे स्वास्थ्य के अनुकूल भारतीय साबुनों की लंबी सूची उपलब्ध है।

इस मामले में प्राक्टर एंड गैंबल नामक कंपनी मुख्य रूप से दोषी है। इस कंपनी ने सन् १९३८ में एक ऐसी तकनीक का विकास किया कुछ ही घंटों में पशु को साबुन बना सकती थी। अब यही कंपनी प्रचार

अभियानों पर पैसा खर्च कर रही है, जिससे सारी दुनिया के खरीददारों को प्रेरित किया जा सके कि पशु न केवल साबुन निर्माण के लिए वरन साबुन परीक्षण के लिए भी जरूरी है। पशु अधिकार संगठनों, के शोध से पता चलता है कि प्राक्टर एंड गैंबल कंपनी उत्पाद परीक्षण में प्रति वर्ष ५०,००० से ज्यादा पशुओं को मार डालती है। वे किस तरह से परीक्षण करते हैं? कुत्तों को विषैले रसायन खिलाए जाते हैं। उनके मुंह को शिकंजे की मदद से जबर्दस्ती खोला जाता है और आपरेशन कर उनकी ध्वनि मंजूषाएं निकाल दी जाती हैं जिससे कि वे आवाज न कर सकें। विषैले रसायन खरगोशों की आँखों में डाले जाते हैं।और निनीपित्र की बाल कटी त्वचा पर इन्हें लगाया जाता है। यह सब शामक या दर्दनाशक दवा दिए बगैर किया जाता है।

संयुक्त राज्य अमरीका में पशुओं पर साबुन का परीक्षण कानून या नियम के अनुसार आवश्यक नहीं है। स्पष्ट है कि प्राक्टर एंड गैंबल कंपनी यह काम अपनी मर्जी से कर रही है। पशुओं पर परीक्षण करने वाली साबुन निर्माता कंपनियां और उनके उत्पाद इस प्रकार हैं: प्राक्टर एंड गैंबल, आइवी, कैमे, आयल आफ ओले, सेफगार्ड, लीवर ब्रदर्स, लाइफ ब्वाय, केयरेस, डव, लक्स और कोलगेट, पामोलिव, जेर्जीन, डायल।

क्या आपका मांस वाला साबुन साफ है? क्या वह साबुन जिसके परीक्षण में इतना अधिक रक्त बहता हो और जिसमें इतनी अधिक मृत पशु की वसा हो, आपके शरीर को साफ कर सकता है। आप साबुन पर पैसा क्यों बरबाद करना चाहते हैं, क्यों नहीं अपने फ्रिज से मांस का एक टुकड़ा निकालते और सारे शरीर पर रगड़ डालते? जब आप ऐसा कर रहे हों, याद रखिए कि मुहांसों पर किए गये अध्ययनों से सिद्ध हुआ है कि कील मुहांसों, 'ब्लैक हैड्स' और पशु वसा का गहरा अंतर्सम्बन्ध है।

मेनका गांधी

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

In the memory of—
HARAKH CHAND NAHATA
Lalit, Pradeep, Dilip Nahata
21, Anand Lok, August Kranti Marg
New Delhi - 110 049
Ph: Resi. 625-1065/7653/6089
Off : 338-1735/5923

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitqnath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN
Phone : 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents, Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940
BHANSALI
Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly : Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

ज्ञानमन्दिर

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC-330 WB/RNP-45

Vol. XXIII No. 11 TITTHAYARA February 2000

Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

આ. શ્રી
કૈલાસ
જ્ઞાનમં
કોબા,

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225